RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-12
December-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

पश्चिम एशिया में भारतीय हितः लुक वेस्ट से लिंक वेस्ट की ओर

*Dr. Sitaram Choudhary

*Department of Political Science, Govt. Arts PG College Chimnpura,Jaipur, Rajasthan (India)

सामान्य परिचय

भारत और पश्चिम एशिया, जो शेष विश्व के लिए मध्यपूर्व और एक भाषायी संस्कृति के कारण अरब देश कहलाते हैं, के सम्बंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सभ्यता के स्तर पर जुड़े हुए है। भारत और पश्चिम एशिया के निवासी एक दूसरे को इस्लाम के उदय से भी पहले से जानते हैं। यहाँ तक कि यह कहने में भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि ''हिन्दुस्तान'' की अवधारणा और हमारे धर्म को 'हिन्दू' नाम देने में अरबों का विशेष महत्त्व रहा है। हम इस बारे में चाहे बहस कर लें कि हिन्दू की धारणा सबसे पहले किसने दी लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि हमें हमारे खुद के हिन्दू कहने से बहुत पहले से ही अरब लोग हमारे लिए हिन्दू राष्ट्र का प्रयोग करते रहे थे। सब चाहे हिन्दू राष्ट्र धार्मिक पहचान बन गया परन्तु तब यह केवल क्षेत्रीय पहचान थी।[1]

भू –राजनीतिक परिस्थितियों में देखे तो अरब सागर अरब प्रायद्वीप और भारतीय प्रायद्वीप दोनों के तटो को धोता है जिसकी लहरों पर सवार होकर सिंधु सभ्यता और मेसापोटेमिया सभ्यताऐं एक–दूसरे तक पहुँची, इतिहासकारों के पास इसके पुख्ता सबूत हैं। भारतीय गणित का अरबों द्वारा विकास और वहां से यूरोप को मिलना सर्वविदित है वही अरबी ज्योतिष का भारत पर प्रभाव सर्वत्र मान्य है।

अरबी घोड़ों से लेकर खुरासान की तलवारें, भारतीय मसाले और अरबी तंदूर, भारतीय शाकाहारी खाना और अरबी मांसाहार का यह संगम प्राचीन काल से चला आ रहा हैं। बाद में अरबों के आक्रमण, तुर्क और फारसियों के आक्रमणों ने रिश्तों में तबदीली ला दी। लगभग 10 वींसदी से चला यह आक्रमण, मारकाट, लूटपाट का सिलसिला अंग्रेजी राज स्थापना तक चला और बीसवीं सदी में तो स्वयं पश्चिम एशिया ब्रिटिश आधिपत्य में आ गया। अंग्रेजी राज के दौरान भारत के विदेशों से सम्बन्ध केवल ब्रिटिश सरकार के लाभ और हानि पर आधारित रहे। ना केवल ब्रिटिश राज वरन् गुलामी से छूटने के बाद भी इसी जंग लगी मानसिकता से निकलने में उसे वक्त लग गया। आजादी के बाद भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण भारत तीसरे मोर्चे का नेता बना जिसमें भारत का पड़ौसी देश पाकिस्तान नहीं था। पाकिस्तान के इस्लामी देश होने वजह से पश्चिम एशियाई देशों का झुकान पाकिस्तान की ओर रहा तथा कश्मीर मुद्दे का इन देशें में अन्तर्राष्ट्रीय रूप दिलवाने का प्रयास किया।[2]

इजराइल का साथ देने के कारण पश्चिम एशिया के देशों के साथ भारत ज्यादा सहज नहीं रह पाया क्योंकि उस समय भारत हित के बजाय भावनाओं द्वारा चलित विदेश नीति अपनाता था और चूंकि भावनाऐं एक जाल की मानिंद होती है जो राष्ट्रीय हितों को गौण बना देती हैं लेकिन बदलती परिस्थितियों ने भारतीय नीति निर्माताओं को यथार्थवाद को अपनाने की प्रेरणा दी है। इसी की प्रेरणा से ना केवल 1992 में इजरायल से स्थायी कूटनीतिक सम्बन्ध बनाये बल्कि शेष पश्चिम एशियाई देशों से भी अच्छे सम्बन्ध बनाने का प्रयास निरंतर किया जा रहा है।[3] यथार्थवादी विदेश नीति का ज्वलंत उदाहरण है कि एक ओर प्रधानमंत्री सउदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा 2016 में करके भारतीयों के लिए माहौल तैयार करते है, तो दूसरी ओर इजरायल दौरे पर जुलाई 2017 में जाकर राष्ट्रीय हितों के लिए कुछ भी करने का साहस दिखाते हैं। जहां एक ओर जनवरी 2016 में भारत अरब सहयोग मंच की पहली मंत्री स्तरीय बैठक में भारत इजरायल से बस्तियां खाली करने की मांग करता है वहीं इजरायल यात्रा पर प्रधानमंत्री मोदी 2017 में इजरायल के शहीदों को भारत का आदर्श बताकर आतंकवाद पर जीरोटॉलरेंस का संदेशा खाडी देशों को दे देते है।[4]

21 वीं सदी में सम्बन्ध

पश्चिम एशिया के साथ भारत के सम्बन्धों को विशेष नीतिगत पहल के रूप में बढ़ाने का प्रयास यूपीए प्रथम के कार्यकाल में श्रीमनमोहन सिंह ने दिया जिसे **लुक वेस्ट** नाम दिया गया। यह लुक वेस्ट भारत की ऊर्जा सुरक्षा, क्षेत्रीय सुरक्षा शक्ति संतुलन को साधने का बड़ा अचूक मंत्र बन सकता था परन्तु इस पर ज्यादा कार्य नहीं हो पाया। यूपीए दो के कार्यकाल में लुकवेस्ट का जिक्र फिर हुआ और छोटे मोटे बदलावे के अलावा कोई अमूल मूल परिवर्तन इस बार भी नहीं आ पाया।[5]

लुक वेस्ट से लिंक वेस्ट

2014 में सत्ता परिवर्तन के बाद बनी एनडीए सरकार ने विदेश नीति में नया बदलाव लाते हुए फास्ट ट्रैक पर डाल दिया जैसे पड़ोस पहले की नीति, अमेरिका से अच्छे सम्बन्धों के साथ रूस को बराबर साथ रखना चीन से आर्थिक सम्बन्ध बढ़ाना लेकिन कूटनीतिक दृढ़ता बनाये रखना साथ ही साथ नयी सरकार ने भारत की विदेश नीति की पुरानी नीतियों में समकालीन आवश्यकताओं के मद्देनजर नये बदलाव किये है यथा लुक ईस्ट का एक्ट ईस्ट में बदलना और इसी बदलाव में लुक वेस्ट को लिंक वेस्ट का नामकरण दिया गया है। अपनी मुहावरेदार भाषा एवम् शब्दों के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में सत्ता संभालने के बाद अक्टूबर 2014 में ऊर्जा सुरक्षा, प्रवासी भारतीयों व क्षेत्रीय स्थिरता के महत्त्व के कारण पश्चिम एशिया की ओर भारत की नीति लुक वेस्ट से आगे बढ़कर लिंक वेस्ट की

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

ओर बढ़ायी ताकि भारत इन देशों से जुड़ाव के ज्यादा प्रयास कर पाये।

अब तक मजबूत कूटनीतिक सम्बंधों की कमी, स्थायी वार्तातंत्र का अभाव, शीर्ष अधिकारियों व राष्ट्राध्यक्षों के दौरों की कमी ने लुक वेस्ट की नीति को कागजों तक ही बनाये रखा लेकिन अब जनवरी 2016 में भारत अरब मंच की पहली मंत्री स्तरीय बैठक, भारतीय प्रधानमंत्री की 2016 में कतर, सउदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात की यात्राओं, जुलाई 2017 में प्रधानमंत्री मोदी की अभूतपूर्व इजरायल यात्रा, वर्ष 2017 के गणतंत्र दिवस पर सउदी अरब के राजा का अतिथि बनाया जाना, पश्चिम एशियाई देशों से सामाजिक सुरक्षा समझौते, ईरान के साथ विशेष समझौते होना कुछ ऐसे कदम है जो भारत को पश्चिम एशिया से सच्चे मायनों में जोड़कर लिंक वेस्ट नीति का निहितार्थ सफल करने का सपना दिखा रहे है।[6]

मोदी की मध्य–पूर्व नीतिः संभावनाए और चुनौतियां

पश्चिम एशिया के साथ भारत की नीति उसके तेल और मजदूरों के भेजे धन से निर्मित होती हैं विस्तारित पड़ोसी ने सरकार के सामने कई चुनौतियां पेश की हैं। पश्चिम एशिया संकटों की कई श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है जो इलाके में भारत के हितों की संभावनाओं की अनदेखी कर सकते हैं। सरकार ने ईराक से भारतीय मजदूरों के बचाव के काम को बेहद संगठित तरीके से अंजाम दिया। लेकिन अभी तक ये साफ नहीं हो पाया है कि पश्चिम एशिया में चलने वाली बदलाव की बयार दिल्ली को कितना अपनी गिरफ्त में ले पाई है। भारत सरकार मध्य–पूर्व को लेकर बेहद सचेत है। ढेर सारे विश्लेषकों का एक दूसरा नजरिया है और वे मजबूत कार्रवाई की वकालत करती हैं। पश्चिम एशिया के खुलासों ने दिखाया है कि न ही पश्चिम एशिया के देश, न ही अमेरिका और न ही दूसरा कोई देश किसी सैद्धांतिक लाइन का पालन कर रहा है। उनकी प्राथमिकताएं समय और जगह के साथ बदल जाती हैं। मोदी की विदेश नीति भी उसी लाइन का पालन कर रही है जो राष्ट्रीय हितों के बिल्कुल अनुकूल हैं। भावनाएं जाल के मानिंद होती हैं जो राष्ट्रीय हितों को गौण बना देती हैं। खाड़ी के इलाके में तकरीबन सत्तर लाख भारतीय रहते हैं। तकरीबन सात लाख मजदूर प्रतिवर्ष खाड़ी देशों में जाते हैं। पश्चिम एशिया में भारत के हितों को बेहतर तरीके से सुरक्षित करने के लिए इलाके की भूराजनीति में उसके लिए एक बड़ी भूमिका तैयार करनी होगी।[7]

मोदी सरकार बहुत सारे भारतीयों को ईराक में आईएसआईएस के चंगुल से सफलतापूर्वक छुड़ाने में कामयाब रही जिन्हें उसने अपहृत कर रखा था। लेकिन मध्य–पूर्व में ढेर सारी चुनौतियां हैं और खासकर भारत की नई सरकार के सामने। कट्टरपंथियों की लॉबी मोदी पर इजरायल के पक्ष और अरब देशों के खिलाफ काम करने का आरोप लगाती है। मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने एक दो बार इजनरायल की यात्रा की थी। उसने कई इस्लामिक देशों को इस बात के संकेत दिए थे कि भारत की नई सरकार इस्लाम विरोधी है। भारतीय विदेश नीति का ये एक बढ़ा–चढ़ा कर पेश किया गया तथ्य है।

चुनिंदा मुस्लिम देशों के हाथ मरोड़ने की अमेरिका की नीति भारतीय विदेश नीति में एक और बड़ा कारक है। मोदी ने ज्यादा हिंसा इस्तेमाल करने के लिए इजरायल के खिलाफ वोट करके मोदी ने अमेरिका को नहीं कहकर अपनी हिम्मत दिखाई हैं। मध्य–पूर्व में अंदरूनी लड़ाई और बहुस्तरीय बंटवारों ने भी भारत की विदेश नीति को अपना रुख तय करने की चुनौती दी हैं।[8]

पश्चिम एशिया में भारतीय हित

पश्चिम एशिया में भारत के तीन महत्त्वपूर्ण सामरिक तथा आर्थिक हित निहित है। पहला प्रश्न इनर्जी सुरक्षा का है, भारत अपनी कुल ऊर्जा आवश्यकता का लगभग तीन–चौथाई भाग विदेशों से आयातित करता है। इसमें तेल व प्राकृतिक गैस मुख्य रूप से शामिल है। भारत द्वारा इनर्जी के नए स्रोतों की तलाश के बावजूद आज भी भारत अपनी 70 प्रतिशत इनर्जी आपूर्ति के लिए पश्चिम एशिया के देशों पर निर्भर है। यदि इन देशों में राजनितिक अस्थिरता होती है तथा तेल का उत्पादन व आपूर्ति प्रभावित होती है तो भारत को एक बड़े इनर्जी संकट का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए भारत इन देशों के साथ अपने सम्बन्धों को मजबूत बनाने के साथ–साथ घरेलू स्तर पर इनर्जी के संकटकालीन भंडारण की योजना बनाई है। इस भंडारण योजना को सफल बनाने के लिए भारत को पश्चिम एशिया के देशों के सहयोग की आवश्यकता है। समीक्षकों का अनुमान है कि भारत में वैकल्पिक इनर्जी के सहयोग की आवश्यकता है। समीक्षकों का अनुमान है कि भारत में वैकल्पिक इनर्जी के स्रोतों की प्रगति को देखते हुए यह स्पष्ट है कि भारत को अगले तीस वर्षों तक तेल के प्रयोग पर निर्भर रहना होगा। भारत विश्व के अन्य क्षेत्रों जैसे रूस, सेण्ट्रल एशिया तथा अफ्रीका में भी तेल व गैस के संसाधनों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है, लेकिन इन संसाधनों की मात्रा इतनी नहीं है कि भारत के लिए पश्चिम एशिया के तेल संसाधनों का विकल्प बन सके। वर्तमान में इनर्जी सुरक्षा भारत की विदेश नीति का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है तथा इस दृष्टि से पश्चिम एशिया भारत के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।[9]

दूसरा, भारत के आर्थिक हितों की दृष्टि से भी पश्चिम एशिया महत्त्वपूर्ण है, सामूहिक रूप से अरब देश भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझीदार देश हैं। 2015 में भारत का इन देशों के साथ व्यापार 183 बिलियन डॉलर था। वैसे तो इस व्यापार में तेल व प्राकृतिक गैस का एक बड़ा हिस्सा है, लेकिन पश्चिम एशिया में भारत के उत्पादों जैसे दवाओं, विभिन्न प्रकार की सेवाओं के लिए एक बड़ा बाजार भी उपलब्ध है। अरब देशों में संप्रभु धन कोष बड़ी मात्रा में उपलब्ध है, जो भारत में निवेश का एक बड़ा स्रोत बन सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त अरब अमीरात तथा सउदी अरब की अपनी यात्रा में इन देशों से निवेश को आकर्षित करने का प्रयास भी किया था। भारत के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की सफलता के लिए भी विदेशी निवेश आवश्यक है। आर्थिक दृष्टि से भारत के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत अरब देशों में निवासरत भारतीय कामगारों द्वारा भेजी जाने वाली विदेशी मुद्रा है। वर्तमान में अरब देशों में 8 मिलियन भारतीय कामगार निवास करते हैं, जो प्रतिवर्ष 70 बिलियन डॉलर की विदेशी मुद्रा भारत को

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रेषित करते हैं। इनमें से 35 प्रतिशत कुशल कामगार हैं तथा 65 प्रतिशत अकुशल कामगार हैं। अकेले गल्फ देशों में ही रह रहे भारतीय प्रतिवर्ष 40 बिलियन डॉलर की विदेशी मुद्रा भारत को भेजते हैं। भारत का एक प्रमुख दायित्व यह भी है कि भारत इनकी सुरक्षात था कल्याण सुनिश्चित करे। इस दृष्टि से भी भारत को पश्चिम एशिया पर ध्यान देने की जरूरत है।[10]

तीसरा, हित रणनीतिक व सुरक्षा से सम्बन्धित है। वर्तमान में पश्चिम एशिया राजनीतिक अस्थिरता, आतंकवादत था हिंसा से ग्रसित है। इस क्षेत्र में शांति व स्थिरता भारत के हितों की पूर्ति के लिए आवश्यक है। इसीलिए भारत इस क्षेत्र में विवादों के राजनीतिक समाधान पर बल दे रहा है। पुनः भारत भी आतंकवाद से पीड़ित है तथा विश्व के प्रमुख आतंकवादी संगठनों अलकायदा, इस्लामिक स्टेट आदि की जड़ें पश्चिम एशिया में स्थित हैं। इसके अलावा दोनों पक्ष खाड़ी क्षेत्र में समुद्री डकैती तथा नशीली दवाओं व हथियारों के अवैध व्यापार की चुनौती का भी सामना कर रहे हैं। इसीलिए भारतीय प्रधानमंत्री ने इस क्षेत्र की अपनी यात्राओं में इन देशों के साथ प्रतिरक्षा व आतंकवाद के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर बल दे रहे हैं। भारत पश्चिमी एशिया के देशों के साथ मिलकर एक आतंकवादी विरोधी रणनीति बनाने के लिए प्रयासरत है। [10]

सुझाव –

- सर्वप्रथम भारत की विदेश नीति को इस क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से संचालित करना चाहिये। अपने राष्ट्रीय हितों को साधाना भारत की विदेश नीति का पहला ध्येय होना चाहिये।
- भारत को पश्चिम एशिया में बहुकेन्द्रिय, बहुपक्षीय रिश्तों पर बल देना चाहिये जिसमें अलग देशों के साथ अलग सम्बन्धों को अपनाकर भारत अपने हितों को साध सकता है।
- यहां भारत को कूटनीतिक बढ़त और ज्यादा करने की ओर प्रयासरत रहना चाहिये जिसमें ज्यादा से ज्यादा यात्राओं को बढ़ावा मिलें।
- भारत को आईएस को कमजोर करने के लिए सारी कोशिशें करनी चाहिये। भारत के मुस्लिम समुदाय को ज्यादा से ज्यादा इस आतंक फैलाने वाले देश का विरोध करके सरकार का साथ देना चाहिये।
- पाकिस्तान के प्रति इन देशों में समर्थन की भावना को भारत को आतंक के दुष्प्रभाव से परिचित करवाकर दूर करना चाहिए।
- अफगानिस्तान से स्थिरता को बढ़ावा देना भारत के लिए जरूरी क्योंकि लिंक वेस्ट तभी सफल हो पायेगा जब अफगानिस्तान स्थिर रह पायेगा।
- भारत और खाड़ी सहयोग परिषद के बीच और ज्यादा आर्थिक एकीकरण की तरफ बढ़ाना भारत की विदेश नीति का प्रयास रहना चाहिए।
- भारत को ईरान व इजरायल के साथ रक्षा व सुरक्षा समझौतो पर और बल देना होगा ताकि भारत पर पड़ौस का पड़ने वाला अवांछित दबाव खत्म हो जाये। चाबहार व आईएनटीसी की सफलता अर्थव्यवस्थाओं का एकीकरण बढ़ाने का सफल प्रयास है। कतर पर लगाये सउदी अबर व खाड़ी सहयोग संगठन के प्रतिबंधों से गहराते संकट को भारत को सक्रिय रहकर हल करवाना होगा।

निष्कर्षः

इस प्रकार भारत पश्चिम एशिया के प्रति विदेश नीति को निष्क्रिय लुक वेस्ट से सक्रिय लिंक वेस्ट की ओर ले जाने के लिए पहला कदम उठा चुका है और उपर्युक्त दिशा में उठाये गये कदम भारत का एशिया की महाशक्ति साबित करने में मददगार होंगे। सामरिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र भारत के लिए महत्त्वपूर्ण हैं एक तात्कालिक सामरिक हित यह है कि भारत–पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद की समस्या का सामना कर रहा है तथा उसे यदा–कदा पश्चिम एशिया के मुस्लिम देशों से समर्थन भी प्राप्त होता रहता है। भारत ने आतंकवाद के मामले में पाकिस्तान को वैश्विक स्तर पर अलग–थलग करने की नीति अपनाई हुई है। इस नीति की सफलता के लिए आवश्यक है कि भारत पश्चिम एशिया के देशों के साथ अपने सम्बन्धों को मजबूत बनाए।

सन्दर्भ

1. बारू, संजय; "इंडिया एंड द वर्ल्ड एसेज ऑफ जिओइकानोमिक्स एंड फॉरेन पॉलिसी, एकेडमिक फाउंडेशन, दिल्ली, 2017.
2. ऐश्वर्या, सुजाता एवं आलम मुजीब; "कंटम्परेरी वेस्ट एशिया", के डब्ल्यू पब्लिशर्स, 2016.
3. ब्लारेल, निकोलस; "द इवोल्यूशन ऑफ इंडियाज इजरायल पॉलिसी", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2014.
4. दत्त, वी.पी.; "इंडियाज फॉरेन पॉलिसी इन ए चेंजिंग वर्ल्ड", नेशनल बुक ट्रस्ट, 2014.
5. सीकरी, राजीव; "चैलेंजेज एण्ड स्ट्रेटजी–रिथिंकिंग इंडियाज फॉरेन पॉलिसी", सेज पब्लिकेशन, दिल्ली, 2013.
6. थरूर, शशि; "इंडिका–इंडिया एण्ड द वर्ल्ड ऑफ 21 फर्स्ट सेंचुरी", पेंगुइन पब्लिकेशन, 2012.
7. धर, वाई.एस.; "इन्टरनल सिक्योरिटी चेलेन्जेज इन अफगानिस्तान एण्ड साउथ एशिया", सुमित एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली, 2013.
8. फिरदोस तबस्सुम; "पीस स्ट्रेटजीज इन सेन्ट्रल एशिया सेन्टर ऑफ सेन्ट्रल एशियन स्टडीज", यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर, 2009.
9. गांगुली, सुमित, "इड़ियाज फॉरेन पॉलिसी : रेट्रोस्पेक्ट एण्ड प्रोसपेक्ट", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2011
10. जोशी, निर्मला; "सेन्ट्रल एशिया द ग्रेट गेम रिप्लेड़ : एन इंडियन पर्सपेक्टिव", न्यू सेन्चुरी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2003.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved